आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 05-02-15

हम भाग्यशाली बच्चों को आत्मा और परमात्मा का एक्यूरेट ज्ञान देकर हमें आत्म-अभिमानी बनाने वाले, निराकार बाप ने कहा, मीठे बच्चे - शान्ति चाहिए तो अशरीरी बनो, इस देह-भान में आने से ही अशान्ति होती है, इसलिए अपने स्वधर्म में स्थित रहो.

बाबा हमें अपने महा-वाक्यों में तीन बातों का ज्ञान देते है - आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का. यह ईश्वरीय ज्ञान हम बाबा से सुनते है, फिर अपने में धारण भी करते है. बाबा की आज की मुरली से आत्मा, परमात्मा और सृष्टि चक्र के ज्ञान पर कहे गये महा-वाक्यों को बाबा की याद में रहकर पढ़ेंगे तो हमारी आत्मा में इस ऊंच ज्ञान को धारण करने की ताकत आयेगी.

आत्मा और परमात्मा पर कहे गये महा-वाक्यों --

- बाबा कहते हैं ओम का अर्थ ही है अहम, मैं आत्मा. ओम माना मैं आत्मा, यह मेरा शरीर है. कहते हैं ना - ओम शान्ति. अहम आत्मा का स्वधर्म है शान्त. ओम शान्ति अक्षर का अर्थ है - हम आत्मा हैं, हमारा स्वधर्म शान्त है. हम आत्मा शान्तिधाम की रहने वाली हैं.

- बाबा कहते हैं तुम पवित्र बन रहे हो. जानते हो हम ब्राह्मणों को शिवबाबा पढ़ाते हैं. वह पतित-पावन है. अभी हम सब आत्माओं को ले जाने के लिए शिवबाबा आये हैं.

- बाबा कहते हैं - बच्चे, तुम आत्मायें शांतिधाम से पार्ट बजाने आये हो. आत्मा का स्वधर्म है शांति. फिर तुम शांति क्यों मांगते हो? क्योंकि देह-अभिमान में आ जाते हो. अशरीरी होने से ही शांति मिलेगी.

- बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग में कहते भी हो हे भगवान आकर हमारी सद्गति करो क्योंकि वह एक ही सर्व का सद्गति दाता है. अब वह खुद आकर कहते है - बच्चे, मुझे याद करो और मेरी एक की ही श्रीमत् पर चलो तो तुम्हारी सद्गति हो जायेंगी.

- बाबा कहते हैं भक्ति मार्ग में सब भारतवासी शिव जयन्ति भी मनाते है परन्तु शिव को कोई जानते ही नहीं. शिव तो भगवान है वही कल्प-कल्प आकर भारत को नर्कवासी से

स्वर्गवासी बनाते हैं. पतित को पावन बनाते हैं. वही सर्व का सद्गति दाता हैं. वही आकर सब धर्मगुरुओं, धर्म-स्थापकों सहित सर्व आत्माओं की सद्गति करते हैं. वह आते भी भारत में हैं.

- बाबा कहते हैं तुमको कोई भी देह याद नहीं आनी चाहिए. अपने को इस देह से न्यारा, आत्मा समझकर बाप को याद करो. बाप तुमको सारे विश्व का मालिक बनाते हैं.

- बाबा कहते हैं अपने को आत्मा समझ मामेकम याद करो. पाँच तत्वों के बने शरीर या प्रकृति को याद मत करो. गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए बुद्धि का योग बाप के साथ लगाओ. देही-अभिमानी बनो. जितना बाप को याद करेंगे उतने तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे. दिव्य-बुद्धि रुपी ज्ञान का तीसरा नेत्र तुमको मिलता हैं.

<u>सृष्टि चक्र पर कहे गये महा-वाक्यों</u> ---

- बाबा कहते है अभी तो कलयुगी पुरानी दुनिया है. नई दुनिया सतयुग को कहा जाता है. पावन दुनिया स्वर्ग नई दुनिया ही होगी. यह लक्ष्मी-नारायण नई पावन दुनिया के मालिक है. देवताओं को कहेंगे स्वर्गवासी. यहाँ सब मनुष्य है नर्कवासी. अभी तुम हो संगमयुग पर.

- बाबा कहते हैं सतयुग में होगी विकर्माजीत संवत. अभी है विकर्मी संवत. अभी तुमको विकर्माजीत बनना हैं. तुम योगबल से विकर्मों जीत पाते हो.

- बाबा कहते हैं तुम राज-ऋषि हो. वह है हद का सन्यासी, तुम हो बेहद के सन्यासी. तुम ब्राह्मणों के सिवाय और कोई राजयोग सिखला न सके.

- बाबा कहते है इस समय सब हैं पत्थर बुद्धि. सतयुग में तुम बनते हो पारस बुद्धि. अभी है संगम. पत्थर से पारस सिवाय बाप के और कोई बना न सके. यह लक्ष्मी-नारायण पारस बुद्धि थे तो विश्व के मालिक थे ना. तुम बता सकते हो यह 5 हजार वर्ष का चक्र है, जिस में हमने 84 जन्म भोगे. अब बाप को याद करने से तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं. सतोप्रधान बनकर सतोप्रधान दुनिया में जाना ही हैं.

ॐ शांति.